इकाई 23 आंतरिक और विदेशी व्यापार

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम मुगलकालीन भारत के आंतरिक और विदेशी व्यापार पर विचार विमर्श करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- स्थानीय, प्रांतीय, और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की पद्धति के बारे में जान सकेंगे;
- आंतरिक व्यापार में विनिमय की प्रमुख वस्तुओं का नाम बता सकेंगे;
- समुद्र और जमीन के रास्ते होने वाले भारतीय विदेश व्यापार की पद्धति की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे; और
- आयात और निर्यात होने वाली प्रमुख वस्तुओं का नाम बता सकेंगे।

23.1 प्रस्तावना

इस खंड की इकाई 21 और 22 में हमने भारत के कृषि और गैर-कृषि उत्पादनों पर विचार विमर्श किया है। इन दोनों इकाइयों में हमने साम्राज्य के विभिन्न प्रांतों में वस्तुओं के उत्पादन की चर्चा की है। हमने यह भी देखा कि वस्तुओं का उत्पादन स्थानीय खपत से ज्यादा होता था। इस अधिशेष उत्पादन ने व्यापारिक गतिविधियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

यह व्यापारिक गतिविधि खेत में अनाज उत्पादन के साथ ही शुरू हो जाती थी। इसी प्रकार शिल्प उत्पादन के क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधि कारीगर के घर से ही आरंभ हो जाती थी। यह गतिविधि स्थानीय, प्रांतीय, अंतर प्रांतीय और देश के बाहर कई स्तरों पर घटित होती थी। इस इकाई में हम अपने अध्ययन काल के दौरान देशी और विदेशी व्यापार पर विचार विमर्श करेंगे।

राजनैतिक स्थिरता और उत्पादन में हुई वृद्धि के कारण इस काल में व्यापारिक गतिविधि में काफी तेजी आई। व्यापार में कई गुना वृद्धि हुई। इस दौरान भारत की व्यापारिक गतिविधियों में कई यूरोपीय देश भी शामिल हुए। सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में ही भारत के पश्चिमी भागों में पुर्तगाली आकर बस चुके थे। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान फ्रांसीसी, डच और अंग्रेज व्यापारी भी व्यापारिक गतिविधियों में शामिल हुए।

इस इकाई में हम दो मुद्दों पर विचार करेंगे i) आंतरिक और विदेशी व्यापार की पद्धति; और ii) आयात और निर्यात होने वाली प्रमुख वस्तुएं।

वाणिज्यिक गतिविधियों के विकास से व्यापार में हिस्सा लेने वाले कुछ विशेषीकृत समुदायों का उदय हुआ। इसी के साथ-साथ कुछ आधारभूत वाणिज्यिक प्रथाएं भी स्थापित हुई। इन मुद्दों की चर्चा इकाई 24 में की जाएगी। इकाई 25 में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों के संगठन पर भी विचार किया जाएगा। आइए, पहले आंतरिक व्यापार की चर्चा की जाए।

23.2 आंतरिक व्यापार

जैसा कि हमने पहले बताया है कि हम स्थानीय, प्रांतीय, तटीय और अंतर प्रांतीय स्तरों पर आंतरिक व्यापार की चर्चा करेंगे।

23.2.1 स्थानीय और प्रांतीय व्यापार

जैसा कि इकाई 16 में बताया जा चुका है : भू-राजस्व नगद में वसूल किया जाता था। इसका अर्थ यह हुआ कि अधिशेष कृषि उत्पाद को बेचा जाता था। इसका अधिकांश हिस्सा गांव में ही बेचा जाता था। इनमें से अधिकांश बंजारों (परम्परागत अनाज व्यापारी) द्वारा खरीद लिया जाता था और वे इसे दूसरे शहरों और बाजारों में ले जाया करते थे। टेवर्नियर नामक फ्रांसीसी यात्री 17वीं शताब्दी में भारत आया था, वह बताता है कि लगभग प्रत्येक गांव में चावल, आटा, मक्खन, दूध, सब्जी, चीनी और विभिन्न प्रकार की मिठाइयां खरीदी जा सकती थीं। यहां तक कि कई गांवों में भेड़, बकरी, मुर्गा आदि भी उपलब्ध होते थे। उसके अनुसार प्रत्येक बड़े गांव में एक सर्राफ या मुद्रा विनिमयदाता होता था। इसके अलावा क्षेत्र विशेष के प्रत्येक शहर में एक बाजार होता था जहां आसपास के लोग सामानों की खरीद-बिक्री किया करते थे। इन नियमित बाजारों के अतिरिक्त **हाट** या **पेंठ** भी लगते थे जहां गांव के लोग रोजमर्रा की वस्तुओं का आदान-प्रदान कर सकते थे या खरीद-बेच सकते थे। **हाट** नियतकालिक बाजार होते थे जो सप्ताह में किसी खास दिन लगाए जाते थे। इस प्रकार के कुछ **हाट** किसी खास वस्तु के व्यापार के लिए भी होते थे।

इन स्थानीय बाजारों में साधारणतया अनाज, नमक, कृषि और घरेलू उपयोग के लिए लकड़ी और लोहे के बने साधारण औजार और मोटे सूती कपड़े उपलब्ध होते थे।

इस प्रकार के बाजार सभी छोटे कस्बों और बड़े गांवों में अवस्थित होते थे। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य के जौनपुर के बारे में बनारसी दास लिखते हैं कि इसमें 52 परगने, 52 बाजार और 52 थोक बाजार या मंडी थीं। इस विवरण से ऐसा लगता है कि प्रत्येक परगने में कम से कम एक बाजार और एक मंडी या थोक बाजार होता था।

इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में छोटे और बड़े बाजारों यथा **हाट**, **पेंठ**, मंडी और व्यक्तिगत रूप से व्यापारियों के माध्यम से व्यापारिक गतिविधियां चलती रहती थीं। तपन राय चौधरी के अनुसार प्रत्येक गांव और उसमें स्थित मंडी विनिमय और वस्तुओं के वितरण की कड़ी के रूप में काम करती थी।

ये स्थानीय व्यापारिक केंद्र उस क्षेत्र के बड़े वाणिज्यिक केंद्रों से जुड़े होते थे। प्रत्येक मुगल प्रांत में एक बड़ा वाणिज्यिक केंद्र होता था जहां सूबा के विभिन्न हिस्सों में उत्पन्न वस्तुओं का व्यापार होता था। आमतौर पर ये बड़े शहर **सूबा** के प्रशासनिक मुख्यालय हुआ करते थे। पटना, अहमदाबाद, सूरत, ढाका, आगरा, दिल्ली, लाहौर, मुल्तान, अजमेर, थट्टा, बुरहानपुर, मसूलीपट्टम, बीजापुर, हैदराबाद, कालिकट, कोचीन, आदि इस प्रकार के व्यापारिक केंद्रों के कुछ उदाहरण हैं। हमारे स्रोतों से पता चलता है कि इन वाणिज्यिक केंद्रों में केवल उस प्रांत की वस्तुएं ही नहीं मिलती थीं, बल्कि यहां दूसरे प्रांतों और विदेशों में बनी वस्तुएं भी उपलब्ध होती थीं। प्रत्येक शहर में कई बाजार होते थे। केवल

अहमदाबाद और उसके आसपास लगभग 19 मंडियां थीं। बाजार पर लगाये गये वाणिज्यिक कर को बाजार के आकार का सूचकांक माना जा सकता है। सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अहमदाबाद से प्रति वर्ष 42,8600 दाम वाणिज्य कर वसूला जाता था। इसी प्रकार दिल्ली, आगरा, ढाका और लाहौर में अलग-अलग वस्तुओं के लिए अलग बाजार होता था। यह कहा जाता है कि दिल्ली में बड़े कुलीनों के लड़के बिना किसी परेशानी के एक दिन में एक लाख रुपये खर्च कर सकते थे। 17वीं शताब्दी के अंत के गोवा के बारे में लिखते हुए जे. लिशोटन बताते हैं कि शहर के मुख्य मार्ग पर प्रतिदिन नीलामी होती थी। वह यह भी बताता है कि एक मार्ग पर बहुत सी दूकानें थीं जिनमें सभी प्रकार के रेशमी, मखमली, साटन, के कपड़े, चीन के बने चीनी मिट्टी के बर्तन, सिल्क और सभी प्रकार के वस्त्र मिलते थे। इन शहरों में बड़ी संख्या में व्यापारी, दलाल और सर्राफ रहते थे। बाहरी व्यापारियों के रहने के लिए इन शहरों में **सरायों** की व्यवस्था थी।

इन केंद्रों में पास के शहरों, कस्बों और गांवों से चीजें बिकने के लिए आती थीं, मसलन पटना में रेशम, बैकंठपुर से सूती वस्त्र, नंदनपुर और सालिमपुर से और सूबा के अन्य भागों से सब्जियां, अफीम और चीनी आती थी।

कुछ शहर कुछ खास चीजों के व्यापार के लिए विशेष बाजार समझे जाते थे। मसलन बुरहानपुर (कपास मंडी), अहमदाबाद (कपड़ा), कैम्बे (रत्न बाजार), सूरत सरखेज (नील), आगरा बयाना (नील) आदि।

इन सभी वाणिज्यिक केंद्रों में टकसाल होते थे जिनमें चांदी, तांबे और कभी-कभी सोने के सिक्के भी ढाले जाते थे। टकसालों के बारे में आप इकाई 20 में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

23.2.2 अंतरप्रांतीय व्यापार

विवेच्य काल में भारत का अंतरप्रांतीय व्यापार काफी विकसित था। यातायात के खर्च और आवागमन में लगने वाले समय को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अंतर प्रांतीय व्यापार का परिमाण काफी ऊंचा था। व्यापार के लिए वस्तुएं एक जगह से दूसरी जगह सैकड़ों और कभी-कभी हजारों मील दूर ले लाई जाती थीं। अंतर प्रांतीय व्यापार में अनाज और विभिन्न प्रकार के कपड़ों का विशेष स्थान था। लम्बी दूरी के व्यापार में विलास की वस्तुओं, धातु और अस्त्र भी शामिल होते थे। इन सभी वस्तुओं की सूची प्रस्तुत करना संभव नहीं है। यहां हम कुछ महत्वपूर्ण वस्तुओं की संक्षिप्त जानकारी देंगे।

पूर्व में, बंगाल का भारत के सभी हिस्सें से व्यापार संबंध काफी विकसित था। हुगली, ढाका, मुर्शिदाबाद, मालदा, सतगांव, टांडा, हिजली, श्रीपुर, सोनार गांव बंगाल के महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे। इनमें हुगली व्यापार का सर्वप्रमुख केंद्र था।

यहां बिहार, उड़ीसा और बंगाल के कुछ भागों से माल लाया जाता था। बंगाल पूरे देश को अनाज की आपूर्ति करता था। पटना से चावल और चीनी बंगाल के बाजारों में आता था। पटना के निकट लखावर कपड़ा उत्पादन का प्रमुख केंद्र था। यहां भारत के विभिन्न हिस्सों और यहां तक कि विदेश से आए व्यापारी माल खरीदते थे। बंगाल में बना कपड़ा पटना से लेकर गुजरात में अहमदाबाद तक उपलब्ध था। गुजरात और बिहार में बड़े पैमाने पर रेशम (सिल्क) बनाया जाता था पर इसके लिए कच्चा माल बंगाल से आता था। इस कच्चे माल से बना रेशम वस्त्र देश के सभी हिस्सों में तथा विदेश भेजा जाता था। कश्मीर का केसर आसानी से बंगाल और बिहार के बाजारों में मिल जाता था। बुरहानपुर में बनने वाला छींट का कपड़ा भी बंगाल के बाजारों में मिलता था। बंगाल का आगरा, बनारस और उत्तर भारत के अन्य शहरों के साथ नियमित व्यापारिक संबंध था।

पश्चिम में, अहमदाबाद और सूरत सबसे बड़े वाणिज्यिक केंद्र थे, यहां के बाजारों में भारत के दक्षिण, उत्तर और पूर्वी भागों में बने कपड़े उपलब्ध होते थे। बेचने के पहले यहां उन्हें सुखाया और रंगा जाता था। बंगाल के कच्चे रेशम से गुजरात में रेशम का वस्त्र बनाया जाता था और उसे उत्तर के बाजारों में ले जाया जाता था। गुजरात को काली मिर्च और मसाले मालाबार तट से प्राप्त होते थे। गुजरात से कपड़ा मुल्तान और लाहौर ले जाया

जाता था। गुजरात में लाख बंगाल से आता था, अपनी गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध सरखेज नील गुजरात से भारत के विभिन्न प्रांतों में भेजा जाता था। गुजरात, कोंकण और मालाबार के शहरों के बीच व्यापक पैमाने पर व्यापार होता था।

उत्तर में, आगरा में काफी मात्रा में रेशम बंगाल से आता था। अवध क्षेत्र से कालीन और कपड़े, गुजरात, बंगाल, पटना, लाहौर और मुल्तान ले जाये जाते थे। कश्मीर का केसर, लकड़ी का सामान, फल, ऊनी शॉल आदि उत्तर, पश्चिम और पूर्वी भारत में पाया जाता था। कश्मीर से मुल्तान, आगरा और दिल्ली तक बर्फ भेजी जाती थी। शाहजादपुर (इलाहाबाद के पास) से भारत के सभी हिस्सों में कागज भेजा जाता था। बयाना (आगरा के निकट) का प्रसिद्ध नील लाहौर, मुल्तान और दक्षिणी भागों में भेजा जाता था। राजस्थान का प्रसिद्ध संगमरमर देश के सभी हिस्सों, खासकर आगरा और दिल्ली में भेजा जाता था। उत्तर से अनाज गुजरात तक ले जाया जाता था।

दक्षिण में होने वाला अधिकांश व्यापार तटों के समीप होता था। बंगाल में उत्पन्न नील को काफी मात्रा में मसूलीपट्टम में बेचा जाता था। मालाबार तट से काली मिर्च और मसाले बीजापुर, कोरोमंडल और कोंकण तट तक ले जाए जाते थे और मसूलीपट्टम से गुजरात का तम्बाकू बंगाल ले जाया जाता था। गोलकुंडा की खानों से पूरे भारत को हीरे की प्राप्ति होती थी।

खनिज और धातु किसी खास जगह ही प्राप्त होते थे, मुगल भारत में देश के सभी भागों में उन्हें व्यापारियों द्वारा पहुंचाया जाता था। नमक का उत्पादन मुख्य रूप से राजस्थान और पंजाब में होता था पर उन्हें उत्तरी और दक्षिणी भारत के सभी हिस्सों में पहुंचाया जाता था। तटीय प्रदेशों में समुद्र से नमक प्राप्त किया जाता था। मध्य भारत में ग्वालियर लोहे का प्रमुख स्रोत स्थान था। इसके अलावा राजस्थान, पंजाब और सिंध में भी लोहा पाया जाता था। अच्छी कोटि का इस्पात गुजरात में कच्छ, दक्खन और दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में पाया जाता था। तांबे का उत्पादन राजस्थान, बिहार, सिंध, और उत्तर भारत के कई हिस्सों में होता था।

23.2.3 तटीय व्यापार

लंबी दूरी और यातायात के तीव्र गति के साधनों के अभाव के कारण अंतर प्रांतीय व्यापार समुद्र के रास्ते होता था जिनमें कई तटीय इलाके शामिल होते थे। पश्चिमी तट पर तटीय व्यापार ज्यादा गतिशील था, हालांकि पूर्वी तट पर भी काफी व्यापारिक गतिविधियां होती थीं। दोनों तटों पर व्यापारिक गतिविधियां विभिन्न तरीकों से संगठित की जाती थीं। पश्चिमी तट पर समुद्री डाकुओं का खतरा गंभीर था। अतः इस रास्ते से जाने वाले जहाज एक कारवां में जाते थे जबकि पूर्वी तट पर पूरे वर्ष छोटी बड़ी नौकाओं द्वारा व्यापार होता रहता था।

पश्चिमी तट पर मई और सितम्बर के बीच सुरक्षा के साथ कारवां बनाकर व्यापारियों के जहाज गोवा से कोचिन और गोवा और खंभात के बीच दो से तीन बार चक्कर लगा लेते थे। खंभात जाने वाले कारवां में विभिन्न आकारों के लगभग 200-300 जहाज और नौकाएं होती थीं। ये गेहूं, तेल, दाल, चीनी, कपड़े और विभिन्न फुटकल वस्तुएं ले जाती थीं। कोचिन और गोवा के बीच जाने वाले कारवां इतने बड़े नहीं होते थे पर इसमें बहुत अधिक प्रकार के सामान ले जाये जाते थे। मलक्का और पूरब से आने वाले जहाज श्रीलंका के आसपास कहीं मिलते थे और फिर बंगाल और कोरोमंडल तट से आई नौकाएं इन्हें सुरक्षित रूप से कोचिन पहुंचा देती थीं। बंगाल के तटीय शहरों में तांबा, जिंक, टीन, तम्बाकू, मसाले और छींट के कपड़ों से लदी नावें कोरोमंडल तट से आती थीं। इसके बदले कोरोमंडल तट पर तांबा, पारा, हिंगुल, काली मिर्च,आदि गुजरात से और मसाले मालाबार से पहुंचते थे। उड़ीसा के तटीय शहरों का भी कोरोमंडल और मालाबार के तटों से संबंध था। विजयनगर और गोलकुंडा से लाया गया कपड़ा, अनाज, लोहा, इस्पात और अन्य धातुएं कोरोमंडल के रास्ते बंगाल पहुंचती थीं। बंगाल के तट से चावल, कपड़े और अन्य

वस्तुएं पश्चिमी तट तक पहुंचाई जाती थी। सिंधु-खंभात, गुजरात-मालाबार, बंगाल-कोरोमंडल, और मालाबार-कोरोमंडल के बीच तटीय व्यापार काफी मात्रा में होता था।

बोध प्रश्न 1

1) स्थानीय व्यापार में **हाट** और **पेंठ** की भूमिका का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

2) प्रांतीय व्यापार के दस प्रमुख केंद्रों का नाम बताइए।

....

....

....

....

....

3) देश के अन्य हिस्सों से गुजरात में होने वाले अंतर प्रांतीय व्यापार का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

23.3 विदेशी व्यापार

शताब्दियों से भारत का व्यापारिक संबंध अन्य देशों के साथ रहा है। कालांतार में व्यापार की पद्धति और व्यापार में शामिल वस्तुओं में परिवर्तन होता रहा। 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान भी भारत का अन्य देशों के साथ समृद्ध व्यापारिक लेने-देन कायम था। इस काल के विदेशी व्यापार की प्रमुख विशेषता यूरोपियों का भारत में आगमन था। इससे भारत के विदेश व्यापार में कई गुना वृद्धि हुई। इस विदेशी व्यापार में भारतीय माल का निर्यात बहुत अधिक था जबकि आयात की मात्रा काफी कम थी। इस भाग में हम इसी विदेश व्यापार पर प्रकाश डालेंगे। इस पर हम निर्यात और आयात शीर्षक के अंतर्गत विचार करेंगे।

i) निर्यात

मुख्य रूप से कपड़ा, शोरा और नील का निर्यात किया जाता था। चीनी, अफीम, मसाले और अन्य विभिन्न उत्पाद निर्यात की अन्य वस्तुएं थीं।

कपड़ा

जैसा कि हम इकाई 21 में पढ़ चुके हैं इस काल के दौरान भारत में कपड़ा उत्पादन अपने उत्कर्ष पर पहुंचा हुआ था। निर्यात बढ़ने से उत्पादन में काफी तेजी से वृद्धि हुई।

यूरोपीय व्यापारियों के आने से पहले मुगल, खोरासानी, इराकी और आरमेनियन भारतीय कपड़े के मुख्य खरीददार थे। ये इन कपड़ों को मध्य एशिया, फारस और तुर्की ले जाते थे। भारत के विभिन्न भागों से खरीदी गई इन वस्तुओं को लौहौर के रास्ते थल मार्ग से ले जाया जाता था। व्यापार के कुल परिमाण का अनुमान लगाना कठिन है। 17वीं शताब्दी के बाद से ही डच और अंग्रेजों ने भारतीय कपड़ों का व्यापार करना शुरू कर दिया था। व्यापार के लिए कपड़ों की कई किस्में उपलब्ध थीं जैसे **बाफता, समानी, खैराबादी, दरियाबादी, अमबर्ती, कैयमखानी,** अन्य कई तरह के सूती कपड़े और मलमल। बाद में पूर्वी तट से भी सूती वस्त्रों के कई प्रकार प्राप्त किए जाने लगे। छींट और रंगीन कपड़ों की विदेशों में खूब मांग थी। गुजरात, जौनपुर और बंगाल के कालीनों का भी निर्यात होता था।

गुजरात और बंगाल के रेशमी वस्त्रों का भी निर्यात होता था। तैयार कपड़े के अलावा सूती और रेशमी सूत की भी मांग थी। मोरलैंड की गणना है कि केवल इंग्लिश कम्पनी की मांग 1625 में 200,000 थान, 1628 में 1,50,000 थान और 1630 में लगभग 1,20,000 थान की थी। गुजरात में 1630 में पड़े अकाल से इस पर प्रभाव पड़ा पर 1638-41 में सूरत से प्रतिवर्ष लगभग 50,000 थान जहाजों द्वारा ले जाए जाने के विवरण मिलते हैं। 1650 के बाद पूर्वी तटों से भी व्यापार शुरू हुआ और मद्रास से प्रतिवर्ष 50,000 थानों की आपूर्ति हुई। डचों की मांग भी प्रतिवर्ष 50,000 थानों से अधिक थी। 1661 के एक दस्तावेज से पता चलता है कि आरमेनियनों ने 10 लाख रुपये का कपड़ा खरीद कर उसे ईरान भेजा था। उपर्युक्त आंकड़े निर्यात का मोटा खाका प्रस्तुत करते हैं, फिर भी इनसे कपड़े के विपुल मात्रा में निर्यात की जानकारी मिलती है।

शोरा

शोरा से बारूद बनाया जाता था और यूरोप में इसकी काफी मांग थी। 16वीं शताब्दी के दौरान इसके निर्यात का कोई हवाला नहीं मिलता है। 17वीं शताब्दी में, डच कम्पनी ने कोरोमंडल से इसका निर्यात आरंभ किया। इसके बाद अंग्रेजों ने भी इस पथ का अनुगमन किया। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान डच और अंग्रेज कोरोमंडल, गुजरात और आगरा से इसका काफी मात्रा में निर्यात कर रहे थे। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बिहार से उड़ीसा होकर और बंगाल के तटों से इसका निर्यात आरंभ हुआ। जल्दी ही बिहार महत्वपूर्ण निर्यातक बन गया।

1658 के बाद अंग्रेज केवल बंगाल के तटों से प्रतिवर्ष 25,000 मन शोरा निर्यात कर रहे थे। 1680 के बाद यह मात्रा और भी बढ़ गई। डच कम्पनी की मांग इससे लगभग चार गुना अधिक थी। 18वीं शताब्दी के दौरान भी अंग्रेज शोरा की मांग करते रहे।

नील

अधिकांश उत्तरी भारत, पंजाब, सिंध और गुजरात में नील का उत्पादन होता था। इसका उपयोग रंगाई के लिए नीले रंग के रूप में होता था। निर्यात के लिए सरखेज (गुजरात) और बयाना (आगरा के निकट) में बनाई जाने वाली नील की काफी मांग थी। पहले यह गुजरात से फारस की खाड़ी और लाहौर से एलेप्पो के बाजारों में भेजा जाता था। बाद में यूरोपीय कम्पनियां भी इसका व्यापार करने लगीं। 16वीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश से पुर्तगाली इसका निर्यात करने लगे थे। ऊनी कपड़ों की रंगाई के लिए यूरोप में इसकी मांग काफी अधिक थी। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान डच और अंग्रेजों ने इसका निर्यात करना आरंभ किया। आरमेनियन भी इसे काफी मात्रा में खरीदते थे। इसके अलावा ईरान के व्यापारी इसे एशिया के बाजारों और पूर्वी यूरोप के लिए खरीदते थे। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान इसे प्राप्त करने के लिए डच, अंग्रेजों, ईरानियों, मुगलों और आरमेनियनों के बीच प्रतिद्वंद्विता शुरू हो गई। 17वीं शताब्दी के मध्य के आसपास डच और अंग्रेज प्रतिवर्ष लगभग 15,000 या 30,000 मन नील प्राप्त कर रहे थे। बाद के वर्षों में यह मांग बढ़ती चली गई।

अन्य वस्तुएं

ऊपर उल्लिखित वस्तुओं के अलावा भारत से और भी कई चीजों का निर्यात होता था।

फ्रांसीसी, डच और अंग्रेज कम्पनियां अफीम खरीदा करती थीं। मुख्य रूप से बिहार और मालवा से इसकी आपूर्ति होती थी। डच और इंग्लिश कम्पनी बंगाल से भारी मात्रा में चीनी की भी खरीद करती थीं। डच यूरोप को अदरख का निर्यात करते थे। आरमेनियन हल्दी, अदरख और सौंफ का निर्यात करते थे। गुजरात और इंडोनेशियाई द्वीप समूह के बीच बड़े पैमाने पर व्यापारिक गतिविधियां होती थीं। यहां से थोक मात्रा में कपड़ा इंडोनेशिया ले जाया जाता था और बदले में मसाला लाया जाता था। भारत में बने सूती रंगीन और छींट के कपड़ों की खूब मांग थी। बाद में यह व्यापार कोरोमंडल तट से होने लगा, यहां से कपड़े का निर्यात और मसालों का आयात होने लगा।

ii) आयात

भारत में होने वाले निर्यात की तुलना में आयात कुछ चुनी हुई वस्तुओं तक ही सीमित था। मुख्य रूप से चांदी का आयात होता था। यूरोपीय कम्पनियां और यूरोप और एशिया के व्यापारी यहां से सामान खरीदकर चांदी से भुगतान करते या चांदी का आयात करते थे। थोड़ा बहुत तांबे का भी आयात होता था। भारत में सीसा और पारे का भी आयात होता था। अंग्रेज चीन से भारत में रेशम और चीनी मिट्टी के बर्तन का आयात करते थे। फारस से अच्छी किस्म की शराब, कालीन और इत्र का आयात होता था। यूरोप में निर्मित शीशों, घड़ियों, चांदी के बर्तनों और छोटे औजारों की भारत के कुलीन वर्ग में मांग थी। सैन्य उपयोग के लिए मध्य एशिया से घोड़ों का आयात किया जाता था। राज्य घोड़ों का प्रमुख खरीददार होता था। इसके अतिरिक्त भारत का पड़ोसी पहाड़ी राज्यों से भी व्यापारिक संबंध था। भूटान और नेपाल से कस्तूरी भारत लाया जाता था यहां से यूरोपीय व्यापारी इसे खरीदते थे। नेपाल और तिब्बत से सुहागा का आयात किया जाता था। इन पहाड़ी राज्यों को इसके बदले में अनाज और लोहा भेजा जाता था।

बोध प्रश्न 2

1) यूरोप के बाजारों में निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं का नाम बताइए।

....

....

....

....

....

2) भारत से नील निर्यात पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

3) भारत में आयात की जाने वाली कुछ प्रमुख वस्तुओं का नाम बताइए।

....

....

....

....

....

23.4 व्यापार मार्ग और यातायात के साधन

अंतर प्रांतीय और विदेश व्यापार के लिए व्यवस्थित व्यापारिक मार्ग और विकसित यातायात व्यवस्था की बहुत आवश्यकता थी। इस भाग में हम इन दो मुद्दों पर विचार विमर्श करेंगे, जिनका वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए खास महत्व था।

अंतर्देशीय व्यापारिक मार्ग

सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में भारत के विभिन्न वाणिज्यिक स्थलों के व्यापारिक मार्गों से जोड़ने में मुगल सम्राटों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। आमतौर पर सड़कों की देखभाल राज्य या क्षेत्र विशेष के राजा किया करते थे। इन मार्गों के बीच में कई नदियां पड़ती थीं। जिनको घाटों पर नाव द्वारा पार किया जाता था और कभी-कभी बड़े पुल भी बनाए जाते थे। इनका निर्माण और देख-रेख राज्य या कुलीन वर्ग किया करता था। वर्षा ऋतु में इन सड़कों पर यात्रा करना कठिन कार्य होता था क्योंकि मानसून के दौरान सड़कें खराब हो जाती थीं। कई यात्रियों ने बरसात के दौरान सूरत-बुरहानपुर मार्ग की बिगड़ी स्थिति का उल्लेख किया है। सड़कों की पहचान बताने और दूरी बताने के लिए राज्य ने जगह-जगह पर कोस मीनारें बनवाई थीं। पर हमारे स्रोत बताते हैं कि उन्हीं मार्गों पर **कोस** मीनारें बनाई जाती थीं जो अधिक उपयोग में आते थे। सभी प्रमुख मार्गों पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सरायें होती थीं। व्यापारी और यात्री इन सरायों में ठहरा करते थे। रहने के अलावा बड़ी सरायों में यात्रियों के सामान को ज्यादा दिनों तक सुरक्षित रखने की भी व्यवस्था थी।

आपकी जानकारी के लिए हम नीचे कुछ प्रमुख व्यापारिक मार्गों की चर्चा कर रहे हैं।

आगरा–दिल्ली–काबुल मार्ग

आगरा–फरीदाबाद–दिल्ली–सोनीपत–पानीपत–करनाल–अम्बाला–लुधियाना–फतेहपुर–लाहौर–रोहतास किला–रावलपिंडी–शमसाबाद–पेशावर–फतेहाबाद–काबुल।

आगरा–बुरहानपुर–सूरत मार्ग

आगरा–धौलपुर–ग्वालियर–नरवर–सिरोंज–हँडिया–बुरहानपुर–तलनेर–नन्दुरबार–किर्का–सूरत।

सूरत-अहमदाबाद–आगरा

सूरत–भडौंच–बड़ौदा–अहमदाबाद–पालमपुर–जालोर–मेर्ता–लुदाना–हिन्दुआना–फतेहपुर सीकरी–आगरा।

आगरा–पटना–बंगाल मार्ग

आगरा–फिरोजाबाद–इटावा–सराय शाहजादा–इलाहाबाद–बनारस–सासाराम–दाउदनगर–पटना–मुंगेर–भागलपुर–राजमहल–दामपुर–ढाका।

आगरा से लेकर बंगाल तक नदी मार्ग थल मार्ग के लगभग समानांतर था।

विदेशी व्यापार के लिए मार्ग

विदेशी और भारतीय व्यापारी जल और थल दोनों मार्गों का उपयोग करते थे।

i) थल मार्ग

मध्य काल का सबसे प्रमुख थल मार्ग "बृहद रेशम मार्ग" (Great Silk Route) था। यह "रेशम मार्ग" बीजिंग से शुरू होकर काशघर, समरकन्द, बल्ख और काबुल होते हुए मध्य एशिया से गुजरता था। भारतीय थल मार्ग इस बड़े मार्ग से लाहौर में जाकर मिलता था। मुल्तान और कांधार से गुजरता हुआ यह यज्द और इस्फहान, बगदाद होते हुए फारस में प्रवेश करता था और यूफरेट्स को पार करने के बाद यह अलेप्पो पहुंचता था। वहां से यूरोपवासी वस्तुओं को जाहाजों में लाद कर ले जाया करते थे।

Major Land Routes
in India
17th Century
Srinagar
Lahore
Multan
Delhi
Agra
Lucknow
Patna
Ajmer
Banaras
Qasimbazar
Dacca
Ahmedabad
Cambay
Hugli
Chittagong
Burhanpur
Balasore
Aurangabad
Puri
Bijapur
Hyderabad
Arabian Sea
Bay of Bengal
Goa
Mosulipatnam
Nizampatnam
(Petapoli)
Colambo
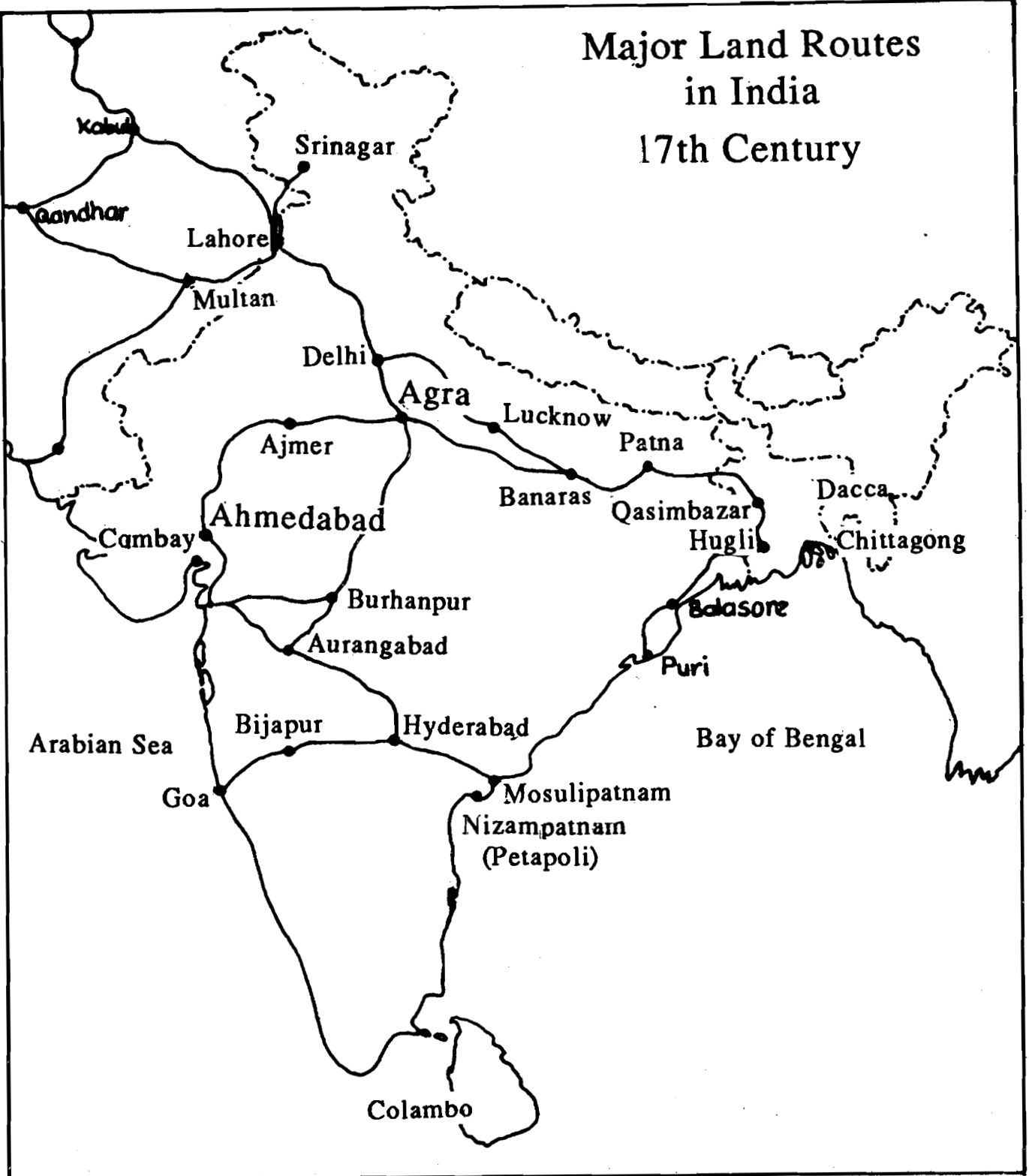
ii) समुद्र मार्ग

अरब सागर और बंगाल की खाड़ी प्रमुख समुद्र मार्ग थे। आशा अन्तरीप (Cape of Good Hope) के रास्ते समुद्र मार्ग की खोज के पहले उत्तर से आने वाला समुद्री मार्ग खम्बात, सूरत, थट्टा से होकर फारस की खाड़ी और लाल समुद्र में मिलता था, दूसरा मार्ग दाभोर, कोचिन, कलकत्ता से होकर अदन और मोछा पहुंचता था। मोछा में वस्तुओं को लाल समुद्र और उसके बाद थल मार्ग से अलेक्जेंड्रिया होते हुए काहिरा पहुंचाया जाता था। अलेक्जेंड्रिया से भी यूरोपीय देशों को वस्तुओं की आपूर्ति की जाती थी। उत्तम आशा अन्तरीय की खोज के बाद यूरोप के देशों को नये अवसर प्राप्त हुए। अब उन्हें अलेक्जेंड्रिया या एलेप्पो पर निर्भर नहीं रहना पड़ा। इसके बदले वे भारत और दक्षिण एशियाई देशों से सीधे व्यापार करने लगे।

पूर्वी समुद्रों के रास्ते भारतीय व्यापारी काफी समय से चीन और इन्डोनेशियाई द्वीप समूहों के साथ व्यापार करते आ रहे थे। हुगली, मसूलीपट्टम और पुलिकट से वस्तुएं सीधे अचिन, बटाविया और मलक्का भेजी जाती थीं। मलक्का जल मार्ग के जरिए व्यापारी चीन में मकाओ और कैंटन तक चले जाते थे।

यातायात के साधन

यहां यातायात के साधनों पर विचार करते हुए हम केवल वाणिज्य के काम में आने वाले साधनों पर ही विचार करेंगे।

थल यातायात

इसमें बैलों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन पर सामान लाद कर ढोया जाता था। इस काल में इस बात का हवाला मिलता है कि बंजारों के एक व्यापारिक कारवां में 10,000--20,000 ढोने वाले जानवर शामिल होते थे जो अनाज ढोते थे। इन्हें टंडा कहते थे। बंजारों के अतिरिक्त दूसरे व्यापारी भी माल ढोने के लिए इनका उपयोग करते थे। एक बैल चार मन और एक बैलगाड़ी चालीस मन तक माल ढो सकती थी। बैलगाड़ियों को खींचने वाले बैल 20 से 30 दिन तक बिना किसी रूकावट के और प्रतिदिन 20 से 30 मील चल सकते थे। देश के पश्चिमी हिस्से में सामान ढोने के लिए ऊंटों का उपयोग किया जाता था। वे जमीन के रास्ते माल ढोकर फारस और मध्य एशिया तक पहुंचाते थे।

ऊंचे पहाड़ी इलाकों पर पहाड़ी घोड़ों, खच्चरों और गधों का उपयोग किया जाता था। यहां आदमी भी माल ढोते थे।

नदी यातायात

भारत में नदियों की बहुलता थी और इनका व्यापारिक मार्ग के रूप में उपयोग होता था। बंगाल और सिंध में नौकाओं का खूब उपयोग होता था। आगरा और बंगाल के बीच नौकाओं से काफी माल आता जाता था। आगरा से चली नौकायें यमुना के रास्ते इलाहाबाद पहुंचती थी वहां संगम पर वह गंगा मार्ग पकड़ कर बंगाल पहुंच जाती थीं। समकालीन स्रोत आगरा और बंगाल के बीच बड़ी संख्या में नौकाओं के चलने की सूचना देते हैं और यह बताते हैं कि राजमहल में लगभग 2000 नौकाएं तट पर खड़ी देखी जा सकती थीं। हमारे स्रोतों के अनुसार सिंध में चालीस हजार नावें प्रयोग में आती थीं।

पटना और हुगली के बीच चलने वाले "पटेला" (एक प्रकार की चपटी नांव) पर 120 से 200 टन तक माल लादा जा सकता था। माल ढोने वाली नौकाएं 1000 से 2000 मन तक सामान ढो सकती थीं। नदी के वेग के साथ चलते समय इनकी गति तेज होती थी। ऐसे में आमतौर पर इसमें थल मार्ग की अपेक्षा आधा समय लगता था। इसके अलावा नदी यातायात सस्ता भी था। उदाहरण के लिए नदी के जरिए मुल्तान से थाट्टा तक माल जाने का खर्च 3-4 रुपये प्रति मन और स्थल मार्ग से इससे कम दूरी के लिए यह खर्च 2 रुपये प्रति मन होता था।

Major Trade Routes 16-17th Century
KAZAK STEPPES
Overland Trade Route
Sea Route
Alexandria
Cairo
Gaza
Damascus
Aleppo
Baghdad
Hamadan
Basra
Medina
Jedda
Mecca
Red Sea
Yemen
Sana
Mocha
Aden
Zofar
Socotra
Arabian Sea
Shiraz
Siraf
PERSIAN GULF
Ormuz
Isfahan
Yazd
Kirman
Nishapur
Herat
Qandhar
Merv
Bukhara
Samarkand
Balkh
Kabul
Multan
Lahore
Delhi
Agra
Jodhpur
Tatta
Ajmer
Cambay
Diu
Surat
Burhanpur
Kulja
WuSu
Urumchi
Hami
Turfan
Ansi
Kashgar
Yarkand
Khotan
LopNor
The Great Wall
TIBET
Hugli
Chitagong
Masulipattam
Madras
Bay of Bengal
Ceylon
Cape Comorin
Colombo
Indian Ocean
From Europe
Achin
Molucca
Bantam

23.5 प्रशासन और व्यापार

मुगल सम्राट व्यापारिक गतिविधियों में रुचि लिया करते थे। वे व्यापार को बढ़ावा देते थे और समय-समय पर व्यापारियों को रियायतें देते थे।

सीमा शुल्क और सड़क कर :

इकाई 20 में हम पहले ही व्यापारियों पर लगाए गए सीमा शुल्क और सड़क कर की चर्चा कर चुके हैं। हम आपको यह बता देना चाहते हैं कि ये कर समय-समय पर बदलते रहते थे। कभी-कभी कुछ वस्तुओं पर सीमा शुल्क हटा दिया जाता था। उदाहरण के लिए जहांगीर ने काबुल और कांधार के साथ होने वाले व्यापार में कुछ वस्तुओं पर सीमा शुल्क हटा लिया था। गुजरात में पड़े अकाल के समय वहां कुछ वस्तुओं पर सीमा शुल्क हटा दिया गया था। 1659 ई. में गद्दी पर बैठने के बाद औरंगजेब ने खाद्यान्नों पर लगे कर और शुल्क हटा लिए।

समय-समय पर कई प्रकार की वस्तुओं पर कर और शुल्क हटा लिया जाता था। इस सन्दर्भ में कई राजकीय आदेश पारित किए जाते थे। सीमा शुल्क से छूट पाने के लिए सभी यूरोपीय कम्पनियां—ब्रिटिश, डच और फ्रांसीसी-सीमा शुल्क में छूट के लिए राजकीय आदेश प्राप्त करने के लिए निवेदन करती थीं। एक अवसर पर औरंगजेब ने सभी प्रकार का सड़क शुल्क समाप्त कर दिया। सम्राटों के राजकीय आदेशों के अनुसार व्यापार के प्रति राज्य उदारवादी दृष्टिकोण अपनाता था पर व्यवहार में स्थिति इससे अलग थी।

प्रशासन का दृष्टिकोण

प्रांतीय राज्यपाल, बाजार के अधिकारी और सीमा शुल्क अधिकारी ज्यादातर उदारवादी नीति लागू करने के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न किया करते थे। वे हमेशा व्यापारियों से कुछ न कुछ वसूल करने की ताक में रहते थे। कभी-कभी वसूल की गई राशि अधिकारी अपने पास ही रख लेते थे। अधिकारियों द्वारा स्वयं व्यापार करने से स्थिति और भी उलझ जाती थी। कुलीन वर्ग के सदस्य और उच्चस्थ पदाधिकारी अक्सर कुछ वस्तुओं पर एकाधिकार स्थापित करने की कोशिश करते थे।

शाहजहां के पुत्र राजकुमार शुजा व्यापार में खूब रुचि लेते थे। एक बड़े कुलीन मीर जुमला ने बंगाल में कुछ वस्तुओं पर अपना एकाधिकार स्थापित करने का प्रयत्न किया। अंग्रेजों ने पहले इसका विरोध किया पर अंततः उन्होंने शोरा उसी के माध्यम से लेना स्वीकार कर लिया। एक अन्य महत्वपूर्ण कुलीन शाइस्ता खां ने अंग्रेजों को बाध्य किया कि वे अपना माल और चांदी उसी को बेचें और उन्हें शोरा की असीमित आपूर्ति का आश्वासन दिया। शाइस्ता खां की प्रतिदिन की आय दो लाख रुपये होने का अनुमान था। उसका पुत्र बुजुर्ग उमेद खां भी बृहद पैमाने पर विदेशों से व्यापार करता था।

इन उच्चस्थ कुलीनों के अलावा मातहत पदाधिकारी भी व्यापार करते थे। वैधानिक तौर पर पदाधिकारियों और कुलीनों को व्यापार में हिस्सा लेने की मनाही नहीं थी। समस्या यह थी कि इस प्रतियोगिता में सत्ता में रहने वाले लोग दमन और शोषण का सहारा लेने लगते थे।

इन उच्चस्थ पदाधिकारियों के दमन के खिलाफ विदेशी कम्पनियों, व्यापारियों और व्यक्तियों की याचिकायें और प्रतिवेदन मिलते हैं। रियायत देने के संदर्भ में कई राजकीय आदेशों की भी जानकारी मिलती है। संचार के विकसित साधनों का अभाव और लंबी दूरी के कारण कई बार रियायतें लागू करने में विलंब हो जाता था और कभी-कभी तो ये आदेश लागू ही नहीं हो पाते थे। यह संघर्ष पूरे काल के दौरान चलता रहा। इन बाधाओं के बावजूद व्यापार बढ़ता रहा और कई देशों के व्यापारी यहां आकृष्ट होते रहे।

बोध प्रश्न 3

1) आगरा-अहमदाबाद और आगरा-ढ़ाका मार्ग में स्थित मुख्य शहरों का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

2) भारतीय तट से यूरोप जाने वाले समुद्री मार्ग का विवरण दीजिए।

....

....

....

....

....

3) वाणिज्य संबंधी राजकीय आदेशों का पूर्ण रूप से पालन क्यों नहीं हो पाता था?

....

....

....

....

....

23.6 सारांश

इस इकाई में हमने विवेच्य काल के देशी और विदेशी व्यापारिक गतिविधियों की चर्चा की है। स्थानीय और प्रांतीय स्तर पर अनाज, मोटे कपड़े, नमक, रोजमर्रा के सामानों आदि का व्यापार होता था। इन वस्तुओं की खरीद बिक्री हाटों या पेंठों के जरिए होती थी। छोटे शहरों के बाजार की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। इस मामले में हम पाते हैं कि वस्तुएं गांव से शहर लाई जाती थीं। भारत के विभिन्न प्रांतों के बीच व्यापारिक गतिविधियां काफी विकसित थीं। जमीन और नदी के रास्ते वस्तुएं एक जगह से दूसरी जगह ले जाई जाती थीं। तटीय प्रदेशों से समुद्र मार्ग के ज़रिए व्यापार होता था। पश्चिमी तट पर तटीय व्यापार ज्यादा सक्रिय था।

विदेश व्यापार का संतुलन भारत के पक्ष में था। एशिया और यूरोप के विभिन्न हिस्सों में भारतीय माल ले जाया जाता था। मुख्य रूप से कपड़ों, नील, शोरा, चीनी आदि का निर्यात किया जाता था। अंग्रेजों के आने के बाद विदेश व्यापार, खासकर नील और शोरा, में काफी वृद्धि हुई। भारत में आयात काफी सीमित था। चांदी, ऊनी कपड़ा और विलास की कई वस्तुओं का आयात किया जाता था।

मुगल प्रशासन व्यापार की सभी वस्तुओं पर कर और शुल्क लगाया करता था। मुगल शासक यूरोप की कम्पनियों को रियायतें दिया करते थे। मुगल कुलीन वर्ग के सदस्यों और

उच्चस्थ पदों पर आसीन पदाधिकारियों के व्यापार में संलग्न होने से बहुत बार व्यापारियों और यूरोपीय कम्पनियों को कठिनाई का सामना करना पड़ता था।

23.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) स्थानीय स्तर पर वस्तुओं के वितरण में हाटों और पेंठों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। यहां विनिमय की जाने वाली वस्तुओं के लिए 23.2.1 देखें।
2) पटना, अहमदाबाद, ढ़ाका, सूरत, आगरा, लाहौर आदि का उल्लेख कर सकते हैं। देखिए उपभाग 23.2.1
3) गुजरात में अहमदाबाद और सूरत सबसे बड़े वाणिज्यिक केंद्र थे जहां देश के सभी भागों से माल आता था। विस्तार के लिए 23.2.2 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) रेशम और सूती वस्त्र, शोरा, नील, चीनी आदि। देखिए भाग 23.3।
2) चांदी, कांच का सामान, छोटे अस्त्र और ऊनी वस्त्र आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं थीं।

बोध प्रश्न 3

1) 23.4 में अंर्तदेशीय व्यापार मार्ग देखिए और उत्तर दीजिए।
2) 23.4 में विदेश व्यापार मार्ग देखिए।
3) पदाधिकारियों और कुलीनों के भ्रष्टाचार और स्वयं व्यापार में भाग लेने के कारण राजकीय आदेशों का ईमानदारी से पालन नहीं हो पाता था। देखिए भाग 24.5